ओ३म्

‘ईश्वर को जानना, उसके स्वरूप व गुणों का चिन्तन मनन तथा ध्यान तथा सदाचरण ही उपासना है’

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुश्य मननशील प्राणी हैं मनन का अर्थ सत्य व असत्य का विचार व निर्णय करना हैं इसके लिए हमें चिन्त्य विशय का अध्ययन करना होता हैं इसके लिए हमारे शास्त्र या फिर आजकल के लौकिक विशयों की अनेक पुस्तकें व ग्रन्थ उपलब्ध हैं अनुभवी विद्वानों से भी विचारणीय विशय के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हैं विचार व मनन करने पर संसार में ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति यह तीन महत्वपूर्ण पदार्थ ज्ञात होते हैं इन्हें जानना प्रत्येक मनुश्य का कर्तव्य हैं

ज्ञान भी दो प्रकार का कहा जा सकता हैं एक सद्ज्ञान व दूसरा मिथ्या ज्ञानं मिथ्या ज्ञान को अविद्या भी कह सकते हैं आजकल ईश्वर के स्वरूप के विशय में संसार व अपने देश के अधिकांश लोग अज्ञान व अविद्या से ग्रस्त हैं ईश्वर विशयक सत्य ज्ञान हमें वेदों व वेदानुकूल ग्रन्थों में उपलब्ध होता हैं वेद संस्कृत में हैं वेदों की संस्कृत लौकिक संस्कृत न होकर एक विशिष्ट संस्कृत है जो ईश्वर की अपनी भाशा हैं इसी भाशा में ईश्वर ने सृश्टि के आरम्भ काल में चार ऋशियों को वेदों का ज्ञान दिया थां ईश्वर से वेदों का ज्ञान मिलने के बाद कुछ काल बाद लिपि व व्याकरण आदि का ज्ञान ऋशियों ने रचा और वेदों को लिपिबद्ध कियां तभी से अर्थात् सृश्टि के आरम्भ से ही वेदाध्ययन व वेद प्रचार की परम्परा आरम्भ हो गई थीं किसी भी भाशा को जानने के लिए उसके शब्दों का अर्थ व उसका व्याकरण आना चाहियें इसके लिए ऋशियों व विद्वानों के समुचित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिसका अध्ययन कर वेद व ऋशियों के बनाये इतर शास्त्रों को जाना जा सकता हैं इससे ईश्वर के सत्यस्वरूप सहित जीवात्मा और सृश्टि का भी यथोचित ज्ञान प्राप्त हो जाता हैं

ईश्वर के सत्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए सबसे सरल उपाय सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन हैं सत्यार्थप्रकाश ऋशि दयानन्द की विश्व प्रसिद्ध कृति हैं इसमें ईश्वर के सत्यस्वरूप सहित ईश्वर से संबंधित सभी प्रकार की शंकाओं व प्रश्नों का उत्तर दिया गया हैं ऋशि दयानन्द के अन्य ग्रन्थों पंचमहायज्ञविधि, ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका, आर्याभिविनय एवं संस्कारविधि आदि का अध्ययन व अभ्यास कर भी ईश्वर, जीवात्मा व सृश्टि का यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हैं ईश्वर के स्वरूप पर दृश्टि डालें तो आर्यसमाज के दूसरे नियम से इसका ज्ञान हो जाता हैं इस नियम में ईश्वर का स्वरूप बताते हुए कहा गया है कि **ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृश्टिकर्ता हैं** यही ईश्वर का सत्यस्वरूप हैं ईश्वर जीवों के कर्मानुसार फल प्रदाता होने सहित मृत्यु के समय बचे मनुश्य के अभुक्त कर्मों के आधार पर मनुश्य का अगला जन्म, जाति, आयु व भोग भी प्रदान करता हैं जीवात्मा पर दृश्टि डालें तो जीवात्मा एक सत् व चित्त स्वरूप वाली सूक्ष्म सत्ता हैं यह आनन्द से रहित हैं यह अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान्, एकदेशी, ससीम, कर्मानुसार ईश्वर की कृपा से जन्म–मरण प्राप्त करने वाली, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर स्वरूप वाली भी हैं प्रकृति अत्यन्त सूक्ष्म सत्व, रज व तम गुणों वाली हैं इनकी साम्यावस्था ही प्रकृति कहलाती हैं इस कारण प्रकृति के विकार से ही परमात्मा स्थूल पंच भौतिक पदार्थों की रचना व सृश्टि की उत्पत्ति करतर हैं अतः वेदों सहित दर्शन व उपनिशदों आदि का स्वाध्याय कर ईश्वर, जीव व सृश्टि के सत्य व शुद्ध स्वरूप को जानाना

भी ईष वर की उपासना के अन्तर्गत ही आता हैं यदि यह ज्ञान न हुआ तो मनुश्य द्वारा की जाने वाली उपासना सफल नहीं हो सकती हैं

ईष वर के गुणों का ज्ञान प्राप्त करने का प्राचीन उपाय तो वेद व उपनिशद आदि ग्रन्थ ही हैं परन्तु वर्तमान में इनकी आंषि ाक व अधिकांष ा पूर्ति सत्यार्थप्रकाष ा, ऋग्वेदादिभाश्यभूमिका व आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों से भी हो जाती हैं इसके साथ ही वेद व वेदभाश्य का अध्ययन कर भी अनन्त गुणों वाले ईष वर के अनेकानेक गुणों का ज्ञान प्राप्त होता हैं कुछ व अनेक गुण तो आर्यसमाज के दूसरे नियम में आ ही गये हैं जिनका उल्लेख ईष वर के स्वरूप की चर्चा में किया गया हैं ऐसे अनेक गुणों का वर्णन ऋशि दयानन्द के ग्रन्थों व वेदभाश्य के स्वाध्याय करने पर मिलता हैं आर्याभिविनय में प्रथम मंत्र के व्याख्यान में आये ईष वर के कुछ गुणों पर दृश्टि डालते हैं कुछ गुण हैं सच्चिदानन्दान्तरस्वरूप, नित्यष ुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव, अद्वितीयानुपमजगदादिकारण, अज, निराकार, सनातन, सर्वमंगलमय, सर्वस्वामिन्, करुणाकरास्मत्पितः, परमसहायक, सर्वानन्दप्रद, सकलदुःखविनाष ाक, अविद्यान्धकारनिर्मूलक, सर्वष ाक्तिमन्, न्यायकारिन्, जगदीष ा, सर्वजगदुत्पादकाधार आदिं ऐसे अनेक गुण आर्याभिविनय के प्रथम मन्त्र में दिये हैं जिन्हें पुस्तक में देखना ही उपयुक्त प्रतीत होता हैं इस ग्रन्थ का अध्ययन कर मनुश्य को ईष वर के अधिकांष ा वा पर्याप्त गुण, कर्म व स्वभाव का ज्ञान होता हैं उपासना में इनका विचार, चिन्तन, मनन व ध्यान ही उपासना कहलाता हैं ईष वर के गुण, कर्म व स्वभाव को जानकर इनका मनन व ध्यान करना, उसकी स्तुति करना व उससे प्रार्थना करना भी ईष वर की उपासना के अन्तर्गत हैं इससे मनुश्य की ईष वर से निकटता होकर ईष वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार मनुश्य के गुणकर्मस्वभाव आदि भी बन जाते हैं आत्मा का बल भी बढ़ता हैं वह पहाड़ के समान दुःख प्राप्त होने पर भी घबराता नहीं हैं महर्शि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन इसका जीता जागता उदाहरण हैं इसके लिए महर्शि दयानन्द जी के पं. लेखराम जी, पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय और स्वामी सत्यानन्द जी लिखित जीवन चरितों को पढ़ना चाहियें इसके बाद अन्य लेखकों के जीवन चरितों को भी पढ़ना चाहिये जिससे मनुश्य जीवन जीने की कला जानी व सीखी जा सकती हैं

यह सब कुछ करने के बाद भी मनुश्य का ईष वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुरूप अपना जीवन बनाना और वैसा ही आचरण करना आवष यक हैं जो ऐसा करते हैं वह सच्चे उपासक होते हैं इससे इतर तो दिखावे के भक्त व उपासक कहे जा सकते हैं यही कारण है कि संसार में सच्चे उपासक बहुत ही कम हैं अधिकांष ा उपासक बनावटी व दिखावटी अर्थात् छद्म उपासक ही हैं यदि मनुश्य ईष वर व आत्मा के स्वरूप को जान ले और ईष वर के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार अपना आचरण बना ले, तो वह सफल मनुश्य वा सच्चा उपासक बन जाता हैं उपासना की सफलता पर समाधि का लाभ प्राप्त होता हैं समाधि लाभ से ईष वर साक्षात्कार और विवेक की उत्पत्ति होती हैं उपासक जीवनमुक्त अवस्था को प्राप्त हो जाता है और जब उसके अधिकांष ा भोग समाप्त होने पर मृत्यु आती है तो वह जन्म व मरण के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त हो जाता हैं जहां वह ईष वर के साथ रहकर सुख व आनन्द को भोगता है और पूरे ब्रह्माण्ड में अव्याहत् गति करता हैं मोक्ष में विचर रही अन्य मुक्तात्माओं से भी मिलता व संवाद करता हैं यही जीवन की अन्तिम व प्रमुख उपलब्धि होती हैं जिसे यह प्राप्त हो गई, उसका जीवन सफल होता है और वह सबसे अधिक सन्तुश्ट व सुखों को प्राप्त जीवात्मा होती हैं हमने ईष वर उपासना का मुख्य रूप से वर्णन किया हैं हम आष ा करते हैं कि नये पाठकों को इससे कुछ लाभ हो सकता हैं इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं ओ३म् ष ांम्

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121